

Sample

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

Model: C1,WP3

SrNo: 101-101-102-9911 / 171

Model: C1,WP3

SrNo: 101-101-102-9911 / 171

Date: 03/05/2024

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 05/03/1987
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 07:15:00 घंटे
इष्ट _____: 02:26:11 घटी
स्थान _____: Jeypore
राज्य _____: Odisha
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:52:00 उत्तर
रेखांश _____: 82:38:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:00:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:15:32 घंटे
वेलान्तर _____: -00:11:41 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:04:40 घंटे
सूर्योदय _____: 06:16:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:05:58 घंटे
दिनमान _____: 11:49:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 20:16:24 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 07:48:46 मीन

चैत्रादि संवत / शक _____: 2043 / 1908
मास _____: फाल्गुन
पक्ष _____: शुक्ल
सूर्योदय कालीन तिथि _____: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 26:35:25
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:08:07 घंटे
जन्म नक्षत्र _____: भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 13:08:03 घंटे
जन्म योग _____: ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 13:54:48 घंटे
जन्म करण _____: कौलव

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: भरणी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गज
नाडी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ले-लेखपाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

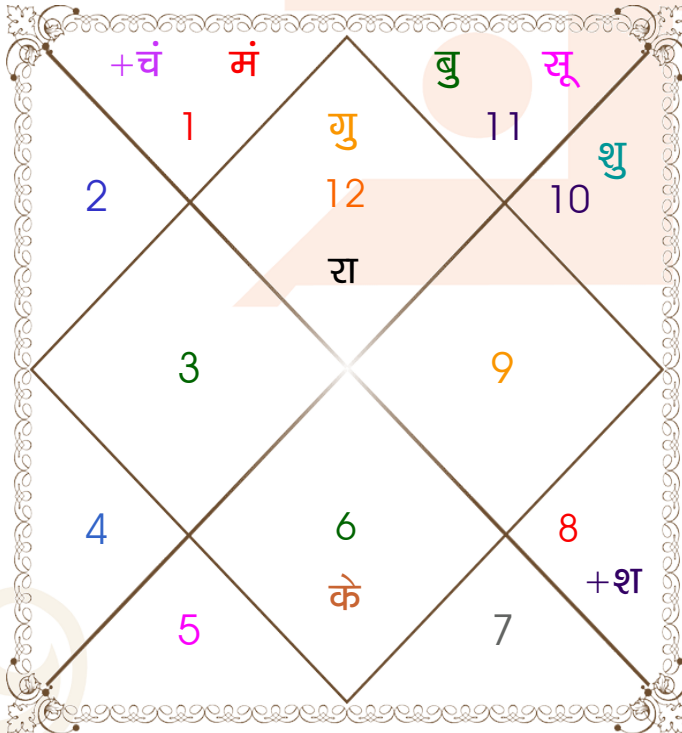
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:48:46	461:49:07	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
सूर्य			कुंभ	20:16:24	01:00:08	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	23:05:13	12:31:19	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल			मेष	14:53:27	00:41:07	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	09:35:27	00:50:10	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	06:52:00	00:14:15	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	08:21:49	01:10:19	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	26:55:11	00:02:34	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	18:06:07	00:01:49	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	18:06:07	00:01:49	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:43:48	00:01:24	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:58:12	00:01:10	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो	व		तुला	16:09:53	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	07:23:28	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

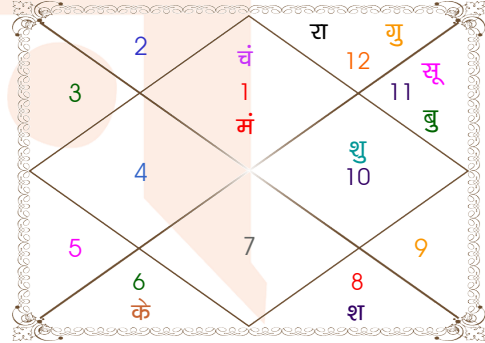
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37

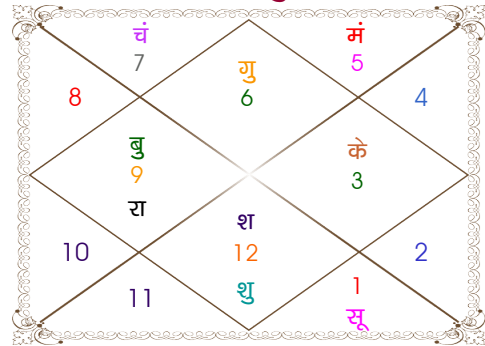
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 22:44:33	मीन 07:48:46
2	मीन 22:44:33	मेष 07:40:20
3	मेष 22:36:07	वृष 07:31:54
4	वृष 22:27:41	मिथुन 07:23:28
5	मिथुन 22:27:41	कर्क 07:31:54
6	कर्क 22:36:07	सिंह 07:40:20
7	सिंह 22:44:33	कन्या 07:48:46
8	कन्या 22:44:33	तुला 07:40:20
9	तुला 22:36:07	वृश्चिक 07:31:54
10	वृश्चिक 22:27:41	धनु 07:23:28
11	धनु 22:27:41	मकर 07:31:54
12	मकर 22:36:07	कुम्भ 07:40:20

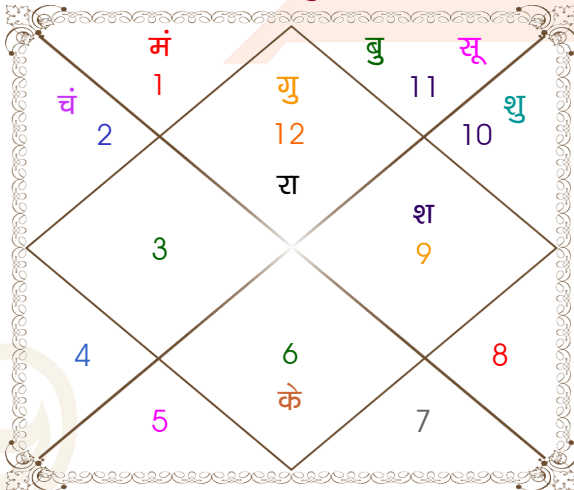
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:48:46
2	मेष	13:01:13
3	वृष	11:56:26
4	मिथुन	07:23:28
5	कर्क	02:58:08
6	सिंह	02:14:50
7	कन्या	07:48:46
8	तुला	13:01:13
9	वृश्चिक	11:56:26
10	धनु	07:23:28
11	मकर	02:58:08
12	कुम्भ	02:14:50

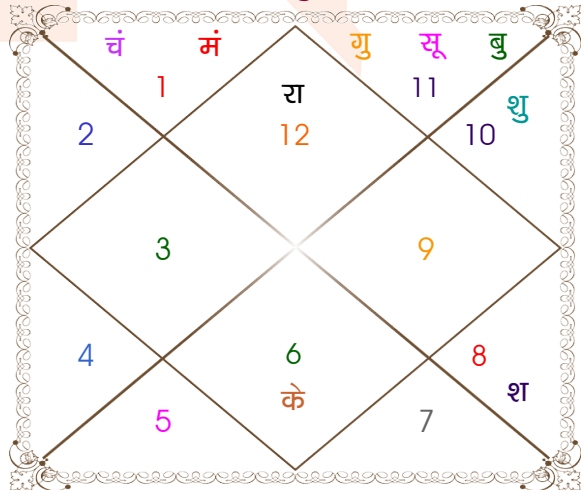
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



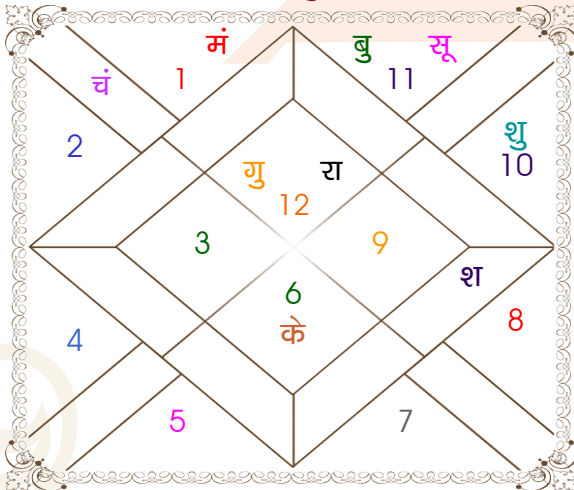
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----			रश्मि	ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि		
सूर्य	भातृ	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	7.24	16 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	शान्त	आगम	4.25	73 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.30	49 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	36 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.61	46 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	6.01	60 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	1.59	42 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	निपीदित	प्रकाश	0.00	31 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	31 %
कुल						26.99	

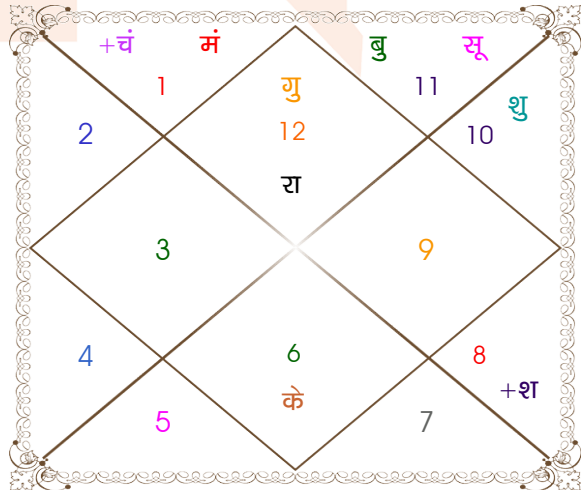
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



कृष्णमूर्ति पद्धति

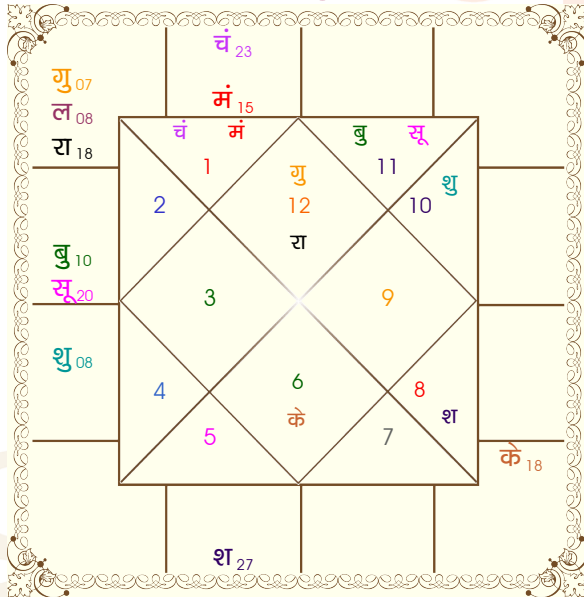
भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 2 मास 18 दिन

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	20:22:32	शनि	गुरु	गुरु	शनि	1	मीन	07:54:54	गुरु	शनि	केतु	शनि
चंद्र		मेष	23:11:21	मंगलशुक्र	शनि	चंद्र		2	मेष	13:07:21	मंगलकेतु	बुध	शनि	
मंगल		मेष	14:59:35	मंगलशुक्र	शुक्र	शनि		3	वृष	12:02:34	शुक्र	चंद्र	राहु	राहु
बुध	व	कुंभ	09:41:36	शनि	राहु	गुरु	शुक्र	4	मिथु	07:29:37	बुध	राहु	राहु	शनि
गुरु		मीन	06:58:09	गुरु	शनि	बुध	गुरु	5	कर्क	03:04:17	चंद्र	गुरु	राहु	चंद्र
शुक्र		मक	08:27:57	शनि	सूर्य	शुक्र	मंगल	6	सिंह	02:20:59	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
शनि		वृश्चि	27:01:19	मंगलबुध	गुरु	शुक्र		7	कन्या	07:54:54	बुध	सूर्य	शुक्र	शुक्र
राहु		मीन	18:12:16	गुरु	बुध	बुध	गुरु	8	तुला	13:07:21	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र
केतु		कन्या	18:12:16	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र	9	वृश्चि	12:02:34	मंगलशनि	चंद्र	शुक्र	
हर्ष		धनु	02:49:56	गुरु	केतु	शुक्र	बुध	10	धनु	07:29:37	गुरु	केतु	राहु	मंगल
नेप		धनु	14:04:20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	11	मक	03:04:17	शनि	सूर्य	शनि	शनि
प्लूटो	व	तुला	16:16:02	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु	12	कुंभ	02:20:59	शनि	मंगलकेतु	गुरु	

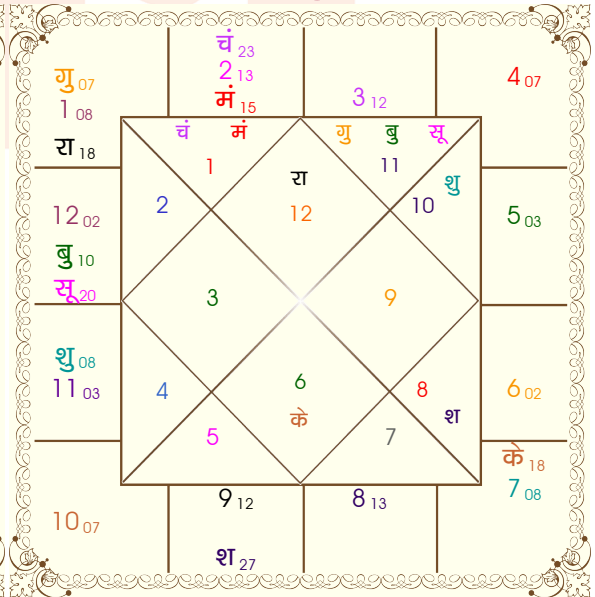
के.पी. अयनांश : 23:34:29

फॉरच्युना : वृष 10:43:44

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- बुध, गुरु- राहु,
2	चंद्र, मंगल, केतु,
3	चंद्र- मंगल- शुक्र-
4	बुध- शनि- राहु-
5	चंद्र- केतु-
6	सूर्य- शुक्र-
7	बुध- शनि- राहु- केतु,
8	चंद्र- मंगल- शुक्र-
9	मंगल- गुरु, शनि,
10	सूर्य- गुरु-
11	चंद्र, मंगल, गुरु- शुक्र, शनि-
12	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 10- 12+
चंद्र	2, 3- 5- 8- 11,
मंगल	2, 3- 8- 9- 11,
बुध	1, 4- 7- 12,
गुरु	1- 9, 10- 11- 12+
शुक्र	3- 6- 8- 11, 12,
शनि	4- 7- 9, 11- 12+
राहु	1, 4- 7- 12,
केतु	2, 5- 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
लग्न राशि स्वामी
राशि नक्षत्र स्वामी
राशि स्वामी
वार स्वामी
लग्न अन्तर स्वामी
राशि अन्तर स्वामी

शनि
गुरु
शुक्र
मंगल
गुरु
केतु
शनि

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	कुंभ	मेष	मेष	कुंभ	मीन	मक	वृश्चि	मीन	कन्या
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मीन	तुला	धनु	सिंह	कुंभ	मीन	मक	कर्क	कर्क	मक
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	मक	कर्क	वृष	मीन	मेष	सिंह	कन्या	मीन
सप्तमांश	तुला	मिथु	कन्या	कर्क	मेष	तुला	सिंह	वृश्चि	मक	कर्क
नवमांश	कन्या	मेष	तुला	सिंह	धनु	कन्या	मीन	मीन	धनु	मिथु
दशमांश	मक	सिंह	वृश्चि	सिंह	वृष	मक	वृश्चि	मीन	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मिथु	तुला	मक	कन्या	वृष	वृष	मेष	कन्या	तुला	मेष
षोडशांश	मेष	मिथु	मेष	वृश्चि	मक	मीन	सिंह	तुला	कन्या	कन्या
विंशांश	मक	मक	कर्क	मक	मिथु	धनु	कन्या	वृष	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	मक	धनु	कुंभ	कर्क	मीन	धनु	मक	मेष	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	सिंह	मेष	धनु	वृष	मिथु	कर्क	कुंभ	मक	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	कन्या	मिथु	मिथु	धनु	कुंभ	कन्या	कन्या	वृश्चि	मीन	मीन
ख्रवेदांश	सिंह	कर्क	तुला	वृश्चि	मेष	कर्क	कन्या	कन्या	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कुंभ	तुला	तुला	मेष	धनु	मीन	मीन
षष्ट्यंश	मिथु	मिथु	कुंभ	कन्या	कन्या	मेष	वृष	मेष	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	9 पूर्णचन्द्र
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.65	12.45	17.80	14.80	15.80	16.15	7.30	9.00	7.70
सप्तवर्ग	12.08	13.23	16.70	14.80	14.80	15.23	7.25	9.23	7.30
दशवर्ग	10.53	10.83	15.25	16.33	15.38	16.03	7.63	9.93	7.38
षोडशवर्ग	11.58	10.80	15.58	16.30	16.33	16.25	8.42	9.75	7.25

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43	57	34	12	21	34	48
सप्तवर्गज बल	75	113	150	105	113	113	41
ओजयुग्मक बल	30	0	30	30	0	30	0
केन्द्र बल	15	30	30	15	60	30	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	163	214	244	162	208	206	104
कुल दिग्बल	36	45	18	51	60	10	34
नतोन्नत बल	35	25	25	60	35	35	25
पक्ष बल	39	78	39	39	21	21	39
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	43	8	49	43	30	5	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	118	111	112	233	252	61	138
कुल चेष्टाबल	0	0	22	55	7	28	29
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-20	-1	0	-20	-6	-12	-16
कुल षट्बल	357	421	414	506	554	337	297
रूप षट्बल	6.0	7.0	6.9	8.4	9.2	5.6	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.2	1.4	1.2	1.4	1.0	1.0
संबंधित पद	4	5	2	3	1	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.72	34.45	27.45	25.54	11.96	30.88	37.21
कष्ट फल	24.21	11.36	31.24	15.14	45.71	28.86	19.52

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	554	414	337	506	421	357	506	337	414	554	297	297
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	-6	19	53	49	46	33	81	52	45	-7	-12	-21
कुल भाव बल	578	452	400	584	517	410	586	399	499	577	336	327
रूप भाव बल	9.6	7.5	6.7	9.7	8.6	6.8	9.8	6.6	8.3	9.6	5.6	5.4
संबंधित पद	3	7	9	2	5	8	1	10	6	4	11	12

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	4	2	4	5	1	3	4	5	4	4	39
गुरु	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	5	56
मंगल	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1	39
सूर्य	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5	5	1	48
शुक्र	4	3	5	6	3	4	4	4	5	5	4	5	52
बुध	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7	6	2	54
चंद्र	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3	49
बिन्दु	25	26	31	27	26	28	24	29	35	34	31	21	337
रेखा	31	30	25	29	30	28	32	27	21	22	25	35	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	3	0	3	3	0	1	3	3	3	2	21
गुरु	2	2	0	0	0	0	3	2	2	0	1	2	14
मंगल	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	1	2	0	1	0	0	2	2	0	1	10
बुध	0	1	0	3	0	0	1	3	1	4	2	0	15
चंद्र	2	0	1	0	0	3	0	1	1	1	0	1	10
रेखा	5	5	11	12	6	7	4	14	15	13	11	6	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	0	0	1	1	3	3	2	13
गुरु	2	2	0	0	0	0	1	2	0	0	1	2	10
मंगल	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	0	2	0	0	0	0	1	2	0	1	7
बुध	0	0	0	3	0	0	0	3	1	4	2	0	13
चंद्र	2	0	1	0	0	2	0	1	0	1	0	1	8
रेखा	5	4	7	12	6	2	1	14	9	13	11	6	90

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	162	57	144	87	92	46	119
ग्रह पिंड	54	48	52	63	66	37	76
शोध्य पिंड	216	105	196	150	158	83	195

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
05/03/1987	17/07/1992	18/07/1998	17/07/2008	18/07/2015
17/07/1992	18/07/1998	17/07/2008	18/07/2015	17/07/2033
00/00/0000	सूर्य 04/11/1992	चंद्र 18/05/1999	मंगल 13/12/2008	राहु 30/03/2018
00/00/0000	चंद्र 05/05/1993	मंगल 17/12/1999	राहु 01/01/2010	गुरु 23/08/2020
00/00/0000	मंगल 10/09/1993	राहु 17/06/2001	गुरु 08/12/2010	शनि 30/06/2023
00/00/0000	राहु 05/08/1994	गुरु 17/10/2002	शनि 16/01/2012	बुध 16/01/2026
00/00/0000	गुरु 24/05/1995	शनि 17/05/2004	बुध 13/01/2013	केतु 03/02/2027
05/03/1987	शनि 05/05/1996	बुध 17/10/2005	केतु 11/06/2013	शुक्र 03/02/2030
शनि 17/07/1988	बुध 11/03/1997	केतु 18/05/2006	शुक्र 11/08/2014	सूर्य 29/12/2030
बुध 18/05/1991	केतु 17/07/1997	शुक्र 16/01/2008	सूर्य 17/12/2014	चंद्र 29/06/2032
केतु 17/07/1992	शुक्र 18/07/1998	सूर्य 17/07/2008	चंद्र 18/07/2015	मंगल 17/07/2033

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
17/07/2033	17/07/2049	17/07/2068	17/07/2085	17/07/2092
17/07/2049	17/07/2068	17/07/2085	17/07/2092	00/00/0000
गुरु 04/09/2035	शनि 20/07/2052	बुध 14/12/2070	केतु 13/12/2085	शुक्र 17/11/2095
शनि 18/03/2038	बुध 30/03/2055	केतु 11/12/2071	शुक्र 13/02/2087	सूर्य 16/11/2096
बुध 23/06/2040	केतु 08/05/2056	शुक्र 11/10/2074	सूर्य 20/06/2087	चंद्र 18/07/2098
केतु 30/05/2041	शुक्र 09/07/2059	सूर्य 17/08/2075	चंद्र 19/01/2088	मंगल 17/09/2099
शुक्र 29/01/2044	सूर्य 20/06/2060	चंद्र 16/01/2077	मंगल 17/06/2088	राहु 17/09/2102
सूर्य 16/11/2044	चंद्र 19/01/2062	मंगल 13/01/2078	राहु 05/07/2089	गुरु 18/05/2105
चंद्र 18/03/2046	मंगल 28/02/2063	राहु 01/08/2080	गुरु 11/06/2090	शनि 06/03/2107
मंगल 22/02/2047	राहु 04/01/2066	गुरु 07/11/2082	शनि 21/07/2091	00/00/0000
राहु 17/07/2049	गुरु 17/07/2068	शनि 17/07/2085	बुध 17/07/2092	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 5 मा 3 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
30/06/2023		16/01/2026		03/02/2027		03/02/2030		29/12/2030	
16/01/2026		03/02/2027		03/02/2030		29/12/2030		29/06/2032	
बुध	08/11/2023	केतु	07/02/2026	शुक्र	05/08/2027	सूर्य	20/02/2030	चंद्र	13/02/2031
केतु	02/01/2024	शुक्र	12/04/2026	सूर्य	29/09/2027	चंद्र	19/03/2030	मंगल	16/03/2031
शुक्र	05/06/2024	सूर्य	01/05/2026	चंद्र	29/12/2027	मंगल	07/04/2030	राहु	07/06/2031
सूर्य	22/07/2024	चंद्र	02/06/2026	मंगल	02/03/2028	राहु	26/05/2030	गुरु	19/08/2031
चंद्र	07/10/2024	मंगल	25/06/2026	राहु	13/08/2028	गुरु	09/07/2030	शनि	13/11/2031
मंगल	01/12/2024	राहु	21/08/2026	गुरु	07/01/2029	शनि	30/08/2030	बुध	30/01/2032
राहु	19/04/2025	गुरु	11/10/2026	शनि	29/06/2029	बुध	16/10/2030	केतु	02/03/2032
गुरु	21/08/2025	शनि	11/12/2026	बुध	01/12/2029	केतु	04/11/2030	शुक्र	01/06/2032
शनि	16/01/2026	बुध	03/02/2027	केतु	03/02/2030	शुक्र	29/12/2030	सूर्य	29/06/2032
राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
29/06/2032		17/07/2033		04/09/2035		18/03/2038		23/06/2040	
17/07/2033		04/09/2035		18/03/2038		23/06/2040		30/05/2041	
मंगल	21/07/2032	गुरु	29/10/2033	शनि	29/01/2036	बुध	13/07/2038	केतु	13/07/2040
राहु	17/09/2032	शनि	02/03/2034	बुध	08/06/2036	केतु	30/08/2038	शुक्र	07/09/2040
गुरु	07/11/2032	बुध	20/06/2034	केतु	01/08/2036	शुक्र	15/01/2039	सूर्य	24/09/2040
शनि	07/01/2033	केतु	04/08/2034	शुक्र	02/01/2037	सूर्य	26/02/2039	चंद्र	23/10/2040
बुध	02/03/2033	शुक्र	12/12/2034	सूर्य	18/02/2037	चंद्र	06/05/2039	मंगल	12/11/2040
केतु	24/03/2033	सूर्य	20/01/2035	चंद्र	06/05/2037	मंगल	23/06/2039	राहु	02/01/2041
शुक्र	27/05/2033	चंद्र	26/03/2035	मंगल	29/06/2037	राहु	25/10/2039	गुरु	16/02/2041
सूर्य	15/06/2033	मंगल	11/05/2035	राहु	14/11/2037	गुरु	13/02/2040	शनि	11/04/2041
चंद्र	17/07/2033	राहु	04/09/2035	गुरु	18/03/2038	शनि	23/06/2040	बुध	30/05/2041
गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
30/05/2041		29/01/2044		16/11/2044		18/03/2046		22/02/2047	
29/01/2044		16/11/2044		18/03/2046		22/02/2047		17/07/2049	
शुक्र	08/11/2041	सूर्य	12/02/2044	चंद्र	26/12/2044	मंगल	07/04/2046	राहु	03/07/2047
सूर्य	27/12/2041	चंद्र	08/03/2044	मंगल	24/01/2045	राहु	28/05/2046	गुरु	28/10/2047
चंद्र	18/03/2042	मंगल	25/03/2044	राहु	07/04/2045	गुरु	12/07/2046	शनि	15/03/2048
मंगल	14/05/2042	राहु	07/05/2044	गुरु	11/06/2045	शनि	04/09/2046	बुध	17/07/2048
राहु	07/10/2042	गुरु	15/06/2044	शनि	27/08/2045	बुध	23/10/2046	केतु	06/09/2048
गुरु	14/02/2043	शनि	01/08/2044	बुध	04/11/2045	केतु	11/11/2046	शुक्र	30/01/2049
शनि	18/07/2043	बुध	11/09/2044	केतु	02/12/2045	शुक्र	07/01/2047	सूर्य	15/03/2049
बुध	03/12/2043	केतु	28/09/2044	शुक्र	21/02/2046	सूर्य	24/01/2047	चंद्र	27/05/2049
केतु	29/01/2044	शुक्र	16/11/2044	सूर्य	18/03/2046	चंद्र	22/02/2047	मंगल	17/07/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

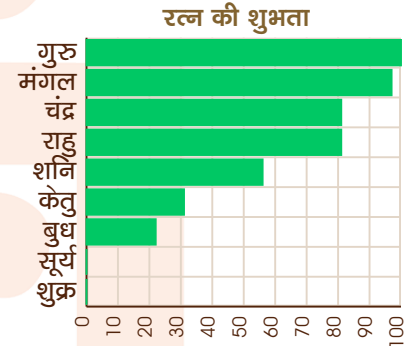
मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	97%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	81%	धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	81%	स्वास्थ्य
नीलम	शनि	56%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	31%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	22%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	17/07/1992	0%	69%	97%	34%	100%	22%	62%	88%	44%
सूर्य	18/07/1998	22%	88%	100%	22%	100%	0%	38%	69%	6%
चंद्र	17/07/2008	9%	94%	97%	34%	100%	0%	56%	69%	6%
मंगल	18/07/2015	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	69%	44%
राहु	17/07/2033	0%	69%	84%	22%	100%	9%	62%	94%	6%
गुरु	17/07/2049	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	81%	31%
शनि	17/07/2068	0%	69%	84%	34%	100%	9%	69%	88%	6%
बुध	17/07/2085	9%	69%	97%	47%	100%	9%	56%	81%	31%
केतु	17/07/2092	0%	69%	100%	22%	100%	9%	38%	69%	53%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ

करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा, मोती व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना, माणिक्य व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी

दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं दसमेश है। आप गुरु रत्न पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है। माता-पिता सुख में बढ़ोतरी करने में पुखराज रत्न की शुभता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुखराज रत्न आपकी आरोग्यता को बढ़ाएगा। पारिवारिक सुख प्राप्ति के लिए भी पुखराज रत्न की शुभता आपके लिए बनी हुई है। पुखराज रत्न दशमेश का रत्न होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्र को शुभ रख आपको उन्नति और सफलता के प्रयाप्त अवसर दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीयेश एवं नवमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। मूंगा रत्न प्रभाव से आपकी धन वृद्धि हो सकती है। इसकी शुभता से आपकी पारिवारिक वृद्धि हो सकती है। माता-पिता का सुख सहयोग आपको प्राप्त होगा। मूंगा रत्न भूमि-भवन संपत्ति का सुख आपको दे सकता है। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह रत्न आपको आय के उत्तम साधन उपलब्ध करा सकता है। भाग्य भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न आपके भाग्योदय का रत्न सिद्ध हो सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आपके लिए शुभ रत्न है इससे आप मधुरभाषी, सहनशील एवं शांति प्रिय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पारिवारिक स्नेह को सुखद बनाये रखने में मोती अहम भूमिका निभा सकता है। मोती रत्न से धन-धान्य और परिवार में सम्मान की प्राप्ति होगी। मोती रत्न आपकी त्याग भावना, बुद्धिमानी, चंचलता और यश को बढ़ायेगा। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आपका मोती रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इस रत्न की शुभता से परिवार में धन आगमन बना रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में चंद्र पंचमेश है। पंचमेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र की शुभता वृद्धि कर सकते हैं। यह रत्न आपको मन की शांति देगा तथा आपकी मानसिक चिंताओं को दूर करेगा। मोती रत्न की शुभता से आपके यश एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप मधुरभाषी, उच्च मनोबल, दूरदर्शी एवं योग्य व्यक्ति बन सकते हैं। इस रत्न की शुभता से अनेक विद्याओं का धनी बना सकती है। मोती शुभ रत्न होकर आपके संतान पक्ष को प्रबल रख सकता है। रत्न प्रभाव से जीवन साथी के प्रति आपकी स्नेह वृद्धि हो सकती है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित

अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शनि एकादशेश एवं द्वादशेश है। आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शुभ होकर आपको उत्तम लाभ, मोक्ष, विदेश यात्रा एवं ऐश्वर्य प्राप्ति में शुभ हो सकता है। यह रत्न आपके आय मार्ग की बाधाओं को दूर कर सकता है। व्ययों पर नियंत्रण रखने में शनि रत्न लाभकारी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न शुभता से आपको बाहरी मामलों का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आय बढ़ने और व्ययों पर नियंत्रण होने से संचित धन भी स्वतः ही बढ़ेगा। मेहनत, निष्ठा बढ़ सकती है और मानसिक चिंताओं में कमी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात् शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती हैं। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते हैं। कुसंगति के मित्र मिल सकते हैं। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड़ सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते हैं। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश है। बुध रत्न पन्ना आपकी शिक्षा में रुकावटें देने के बाद पूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से विलम्ब के बाद आपको सरकारी नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। पन्ना रत्न आपके मातृ पक्ष, हर प्रकार की संपत्ति और घर गृहस्थी के सुखों में कमी कर सकता है। पन्ना रत्न आपके दांपत्य के वातावरण को कष्टमय बना सकता है। साझेदारी कार्यों में भी रत्न प्रभाव से प्रतिकूल फल प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपके माता से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। पन्ना रत्न कीर्ति, धन एवं दुष्ट संगति में आ सकते हैं। पन्ना रत्न पहनने पर आप अपव्ययी हो सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावाओं के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते हैं। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में सूर्य षष्ठेश है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी शिक्षा

को अपूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यक्तित्व के गुणों में कमी हो सकती है। समस्याओं का समाधान निकालने की जगह समस्याओं से भागने की प्रवृत्ति यह रत्न आपमें विकसित कर सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपको सरकारी क्षेत्रों में नौकरी प्राप्ति में संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से कोर्ट कचहरी के मामलों में आपको समझौते करने के लिए आप बाध्य हो सकते हैं। इसके अलावा माणिक्य रत्न रोग, ऋण एवं शत्रु पक्ष की चिंताओं में समय समय पर वृद्धि करता रहेगा। आत्मविश्वास की कमी आपकी उन्नति के विकास को बाधित कर सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आय क्षेत्रों की सफलता प्रभावित हो सकती है। बुद्धि चातुर्य के असहयोग के कारण आपको विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्धि में कमी हो सकती है। इस रत्न से आपके नियमित रूप से धनागमन बाधित हो सकता है। दिनों दिन धनवृद्धि में अस्थिरता आ सकती है। आपके घर में सभी प्रकार की समृद्धि और सम्पन्नता के पक्ष से भी हीरा रत्न अनुकूल फलदायक नहीं होगा। अधिक से अधिक धन पाने के लिए आप सत्य से विमुख हो सकते हैं। इमारतें बनवाने का कार्य आपको हानि दे सकता है। विवाह के माध्यम से आपको धनहानि हो सकती है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीयेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके व्यक्तित्व के तेज में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके कार्यों की निपुणता में न्यूनता देगा। यह रत्न साहस और पराक्रम दोनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं होने देगा। विषयों को सूक्ष्मता से समझने का गुण यह रत्न आपको दे सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको वात रोग दे सकता है। वैवाहिक जीवन के सुख भी रत्न प्रभाव से बाधित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी जीवनशैली घूमने फिरने की अधिक हो सकती है। हीरा रत्न जीवन के विशेष विषयों में आपको परिवर्तन करना सुखद लग सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(17/07/2049 - 17/07/2068)

शनि की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(17/07/2068 - 17/07/2085)

बुध की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(17/07/2085 - 17/07/2092)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र
माणिक्य	ॐ घृणि सूर्याय नमः
मोती	ॐ सों सोमाय नमः
मूंगा	ॐ अं अंगारकाय नमः
पन्ना	ॐ बुं बुधाय नमः
पुखराज	ॐ वृं वृहस्पतये नमः
हीरा	ॐ शुं शुक्राय नमः
नीलम	ॐ शं शनैश्चराय नमः
गोमेद	ॐ रां राहवे नमः
लहसुनिया	ॐ कें केतवे नमः

निषेध रत्न

हीरा, नीलम, गोमेद
गोमेद
हीरा, गोमेद, नीलम

हीरा, गोमेद
माणिक्य, मूंगा, पुखराज
माणिक्य, मूंगा, पुखराज
माणिक्य, मोती, मूंगा

दान पदार्थ

गेहूँ, चंदन, घी, लाल वस्त्र
चावल, चीनी, घी, श्वेत वस्त्र
गेहूँ, ताम्र, गुड़, लाल वस्त्र
मूंग, कांसा, हरित वस्त्र
चने की दाल, गुड़, पीला वस्त्र
चावल, चांदी, श्वेत वस्त्र
काला तिल, तेल, काला वस्त्र
तिल, तेल, कंबल, नीला वस्त्र
सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के हैं। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं। आपके चहरे पर एक तेज होता है। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते हैं। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप महत्वकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ों की बातों पर अमल करते हैं। आत्मविश्वासी

है, और अपने कार्यों में आपको दक्षता प्राप्त हैं। साथ ही आपने दृढ़ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यों को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्ठेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरान्त शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



साढेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1987-17/12/1987	-----	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगुली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	गुरु, चंद्र, मंगल
		मारक	-	सूर्य, शुक्र, शनि
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	गुरु, राहु, चंद्र
		मारक	-	सूर्य, केतु, बुध

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	39%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	58%	धन, सन्तति सुख
मंगल	51%	धन, भाग्योदय
बुध	42%	कम खर्च, सुख, दम्पति
गुरु	89%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
शुक्र	44%	धनार्जन, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
शनि	49%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
राहु	86%	स्वास्थ्य,
केतु	40%	दम्पति, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शुक्र	17/07/1992	25	47	56	52	63	84	55	74	67
सूर्य	18/07/1998	82	60	56	71	75	28	44	49	26
चन्द्र	17/07/2008	50	91	75	52	63	54	43	49	26
मंगल	18/07/2015	50	91	88	27	75	54	43	49	51
राहु	17/07/2033	25	35	31	39	94	53	72	105	26
गुरु	17/07/2049	50	60	56	27	107	28	59	93	38
शनि	17/07/2068	38	35	31	64	79	53	87	90	26
बुध	17/07/2085	82	35	44	83	63	53	57	61	38
केतु	17/07/2092	25	35	56	39	63	69	30	49	82

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तृविनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

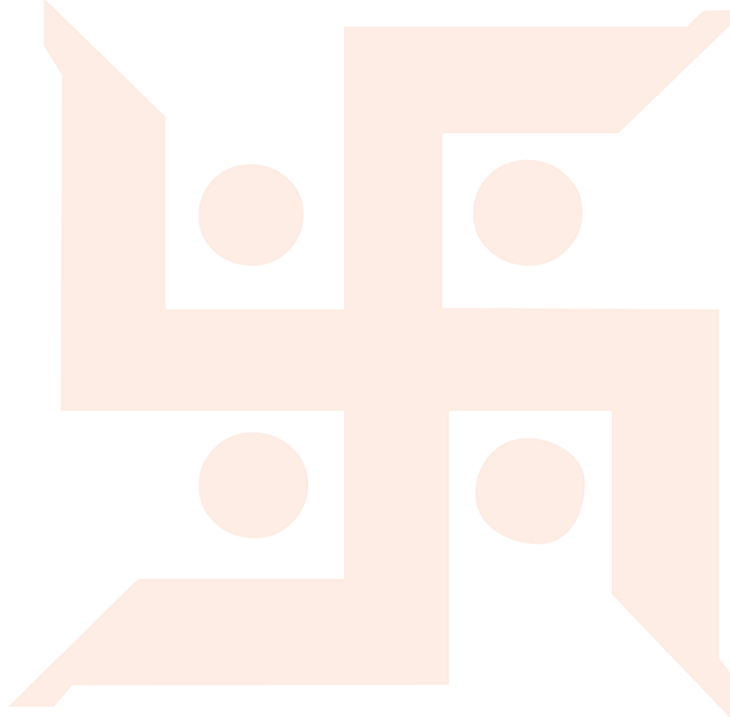
आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो

आप अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरघः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाहर्ष नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाहर्ष नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं ।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं ।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे ।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में बृहस्पति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही

बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शों से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कन्या राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यवान एवं विविध कार्यों में चतुर होता है केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता तेजस्विता साहस एवं पराक्रम का भाव रहता है लेकिन कर्तव्यों के प्रति उसमें उपेक्षा की भावना रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्यों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसिक कार्यों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। स्वच्छता के प्रति वे विशेष ध्यान देंगी तथा उज्ज्वल वस्त्रों को धारण करेंगी। अपनी बोलचाल में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। लेकिन केतु के प्रभाव से वह अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करेंगी तथा परिवार तथा समाज के प्रति कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगी जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आएगी।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण की सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंगों में पुष्टता तथा सुडौलता विद्यमान होगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक लगेगा। इसके अतिरिक्त संगीत एवं कला आदि में भी रुचि होगी तथा पाश्चात्य साहित्य का भी अनुकरण करेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध उत्पन्न होंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा तथा प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे। लेकिन पत्नी की तेजस्वी प्रवृत्ति से यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा। अतः ऐसे समय पर संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह साधारण परिवार में होगा एवं सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वे सामान्य रहेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध कम ही होंगे तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह की भाव की उपेक्षा रहेगी। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं अवसरों पर एक दूसरे से सलाह सहमति या आवगमन भी कम ही होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा उनकी वह यथोचित सेवा नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग कम ही प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी। अतः साझेदारी के कार्यों की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अग्रबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेंगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारम्भिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।